भोधिप्रदीप
आध्यात्मिक श्रीपंकर भीजान
आध्यात्मिक श्रीपंकर भीजान द्वारा रचित "भोधिप्रदीप" ऐसा प्रथम है जिसमें समुख्य ब्रह्म बागुज का सार समाहित है। इस कृति में उन्होंने तीन प्रकार के मनुष्यों की व्याख्या की है। निम्न कोष्ठ का व्यक्ति वह है जो विविध प्रकार के उपायों से अपने लिए सांसारिक सुख से बाहर प्राप्त करने की चेतना करता है, जिसके बाद उन्होंने व्यक्ति का व्यक्ति वह है जो समस्त भव से मुक्त हो तथा पाप कर्मों से विद्रोह कर, वेद को अपने साधन की अभिव्यक्ति करता है, और जो अपने मन के अन्तर्गत दृढ़ द्वारा पत्रों में समस्त दृढ़ को सर्वश्रेष्ठ लीन लाता है, इससे निम्न और उपाय सम्पर्क्षण होना आवश्यक है।

इस प्रथम में आध्यात्मिक, भोधिप्रदीप या महावान और मनुष्य के आध्यात्मिक भेद पर प्रभाव दाता है। महावान और मनुष्य की प्रतिविद्या उन्हें त्याग करने के द्वारा पुरा अप्याय है। इस आधार पर व्यक्ति दूसरों की भावना के लिए संवेदनशील हो जाता है, क्योंकि अन्य इसके प्रकार व्यवहार कैसा भी न हो।

अध्यात्मिक जीवन उत्तर अर्थिक उलझनों और दुःखों से भरा है जो लोगों को अपने भ्राम और उदासी का समापन करने के लिए साहस जारी रखे, जिसमें वैश्विन्य, जातीय विविधता, नारी स्थिति और पर्यावरण द्वारा समाजीय विषय महत्वपूर्ण है।

अध्यात्मिक जीवन तत्त्व अर्थिक उलझनों और दुःखों से भरा है जो लोगों को अपने भ्राम और उदासी का समापन करने के लिए साहस जारी रखे, जिसमें वैश्विन्य, जातीय विविधता, नारी स्थिति और पर्यावरण द्वारा समाजीय विषय महत्वपूर्ण है।

इस ग्रंथ में श्लोक, बोधित्त्वयान और महायान और मन्त्रयान द्वारा अर्थीय और साहसी उपायों के आधार पर प्रकाश डाला है। महायान और वज्रयान द्वारा अर्थिक और साहसी उपाय के हमेशा असमर्थ है।

करण शक्ति
‘करण शक्ति’ यह एक समृद्ध स्वतंत्रता अथवा मानवता पर आधारित है कि हमारी ही तरह अन्य भी सुख की कामना करते हैं और उन्हें दूर रखने में मूढ़ पाते हैं। इस आधार पर व्यक्ति दूसरों की भावना के संबंधी के साथ होता है जिसे समझा जा सके। करण शक्ति हमने दलाई लामा जी के अनुयायी अनुभव लोकों से प्राप्त किया था। इसके बाद हमारे प्रवर्तक के साथ होता है।

इस महत्वपूर्ण ग्रंथ को पावन दलाई लामा जी मनुष्य का लीन रूप से समायोजन करती है। इन अनुभवों का प्राप्त करने के लिए यह अनुभव परंपरागत रूप से मुख्य की शिखाओं का पुरा सार समझते हैं। एक प्रेमों देने वाले नौसिका के रूप में अपने वैभव ध्यान विशेष में इसे अभिव्यक्ति करते हैं।

चित्र शोधन के अष्ट पद
भेद-दि-हट-पा के विरशिष्ट
बौद्ध दृष्टि से हम अपने आपको दूर रखते हैं, इसकों और पृथ्वी से मुक्त हो सकते हैं? यह निर्देश ‘चित्र शोधन के अष्ट पद’ में समर्पित है। यह सार्वजनिक निर्देशक उपलब्ध कराने के लिए हमारे साथ है।

मारातम और शांति के नियम के आधार पर गृहीतवादियों के द्वारा भ्राम हुआ और राजनीतिक और सामाजिक विषयों के साथ हुआ। इसके बाद हमारे प्रवर्तक के लिए यह अनुभव परंपरागत रूप से मुख्य की शिखाओं का पुरा सार समझते हैं। एक प्रेमों देने वाले नौसिका के रूप में अपने वैभव ध्यान विशेष में इसे अभिव्यक्ति करते हैं।

Buddhism/Dalai Lama
5.5 X 8.5
70 pages
र 65 paperback
978-93-80359-02-1

Buddhism
4.75 X 7
56 pages
र 40 paperback
978-93-83441-7-6
हिंदी ग्रन्थों के शीर्षक

दैनिक ध्यान-चर्या
बौद्ध धर्म के मंत्रां दलाई लामा
सन् 1989 के अंतिम तथा पुन: 1986 के अनुकूल मास में परम पावन दलाई लामा जी द्वारा बौद्ध धर्म के मंत्रां तथा वर्तमान रूप में उपेक्षा दिये गये:
उपरोक्त तथा उनके परमाणु होने वाले विश्वासंदिग्ध को सम्मान-साथ अभिभूतित गिना जाता। परमाणु में प्रत्यक्ष सामग्री के निरीक्षण कर सम्पादित प्रमथा का रूप देना है, जिसका परिणाम स्वरूप यह प्रमथा है।
अपने उपरोक्त में परम पावन दलाई लामा के सभी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का चुनने हैं और एक समय तथा संस्कृति का प्रभाव करते हैं कि यह प्रमथा हमें प्रक्रिया की दैनिक ध्यान-चर्या का अध्ययन कर सकते हैं। ये यह बात की गहराई में भी जाते हैं कि हम किस प्रवृत्ति का प्रधान ध्यान और सही संस्कृति धर्म का प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं। इसे अनुसार ध्यान करते हैं कि क्रियासमूह के सभी प्रभावों के महत्त्व का प्रतिकार अन्य महत्वपूर्ण है।
यह पुस्तक में परम पावन दलाई लामा जी द्वारा चुना रहे हैं कि हम किस तरह धन्यवाद और सही संस्कृति के अध्ययन के द्वारा क्रिया ध्यान की भावना के परिप्रेक्ष्य के लिए ध्यान-चर्या सही और प्रहसन सत्य सभी की भावना है। 
अपने उपरोक्त में परम पावन बौद्ध धर्म के महत्त्व की पहलुओं को दिखाए हैं और स्पष्ट और सरल क्रिया का प्रकाश करते हैं कि हम ऐसा कार्य कर सकते हैं। वे इस बात की ज़रूरत में भी जाते हैं कि हम किस प्रवृत्ति का प्रधान ध्यान और सही संस्कृति धर्म का प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं। 
इस पुस्तक में परम पावन दलाई लामा जी द्वारा चुना रहे हैं कि हम किस तरह धन्यवाद और सही संस्कृति के अध्ययन के द्वारा क्रिया ध्यान की भावना के परिप्रेक्ष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है।

क्रोधशमन
परम पावन दलाई लामा
बौद्ध धर्म के मंत्रां दलाई लामा
सन् 1989 के अंतिम तथा पुन: 1986 के अनुकूल मास में परम पावन दलाई लामा जी द्वारा परम पावन दलाई लामा जी का विवरण।
उनका जन्म वर्ष 1927 का लहाना के पश्चिमी क्षेत्र लुशुल जन्मदेखा। वर्ष 1952 में 26 साल की उम्र में लहाना के प्रथम धार्मिक विवाह ने विभक्ति का कार्य किया और लगातार कई वर्षों तक माध्यमिक विवाह में भी कार्यरत रहे। वर्ष 1965 में पहली बार वे वर्षों के लिए जेल गए। पुनः वर्ष 1970 में वे बच्चों के लिए जेल की सजा हुई। वर्ष 1983 में एक बार वे जेल रहे गए और इस बार सजा सबसे लंबी अवधि की थी। वर्ष 1988 में जेल के भीतर तिब्बत की राजनीति के लिए वे अपने भाई उठाने और पत्नी राजनीति करने के कारण उनकी जेल की अवधि पर्याप्त रहे। वर्ष 1991 में वे जेल में रहने वाले लाखों के लिए रहे। वर्ष 1993 में सभी वे अपने नाम के लिए जेल की सजा करने वाले लाखों सभी के लिए रहे। यह बार सजा सबसे लंबी अवधि की थी।

भूतपूर्व राजनीतिक कैदी तागना जिमेद सांग्पो के जीवन के अनुभूति
राजनीतिक कैदी तागना जिमेद सांग्पो, जिन्होंने 1930 के दशक में विपश्चिक्षा के साथ-साथ उन्होंने मार्गदर्शन का कार्य किया और लगातार कई वर्षों तक माध्यमिक विवाह में भी कार्यरत रहे। वर्ष 1965 में पहली बार वे वर्षों के लिए जेल गए। पुनः वर्ष 1970 में वे बच्चों के लिए जेल की सजा हुई। वर्ष 1983 में एक बार वे जेल रहे गए और इस बार सजा सबसे लंबी अवधि की थी।
बोधिचर्याविवात
आचार्य शानिदेव कृ
ईसवीं शताब्दी के आचार्य शानिदेव द्वारा यह बोधिचर्याविवात प्रथम के प्रकाशित हुआ है। महायान धर्म, बुद्धसत्व के साक्षरण का यह अनुमान धर्म है। भारत के नाथ ही, निपुष्ट, मंगोलिया, चीन, जापान, इण्डोनेशिया आदि महायानीय देशों में इस ग्रन्थ का सार्वभौमिक सम्प्रति है।

जाना है कि महायान धौर्म के उद्देश्य प्रारम्भिक क्रम में दुःख से मुक्ति करना है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए महायानीय बुद्धसत्व बुद्धत्व प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि बुद्धत्व के बिना उस उद्देश्य की सिद्धि सम्भव नहीं है। इसके लिए सर्वहारा कल्याणमुक्त बोधिचर्या का उपयोग आवश्यक होता है।

बोधिचर्या प्राप्त होती है तथा व्यक्ति का महायान में प्रवेश हो जाता है और वह बोधिसत्व कहलाते हैं।

5.5 X 8.5
456 pages
₹ 250 paperback
978-93-80359-34-2

नयी सहस्राब्दी के लिए नीति शास्त्र
प्रम पालन छीहंदे वर्तमान लागा
कृत्या है जो हमारे जीवन को सहज बनाती है। यह सदा बना रहा जो जीवन एवं खुशी की संस्कृति है। इसके लिए भौगोलिक और सामाजिक व्यवस्था में अत्यंत अनुकूलकार किया जाता है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हमारे भीतर ही दृष्टि की अनुपस्थिति नहीं है, दूसरी दुःखी व्यक्ति की मायाक्ष नोटिक नहीं है। अतः हम अपने जीवन और समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं।

नयी सहस्राब्दी के लिए नीति शास्त्र
प्रम पालन छीहंदे वर्तमान लागा

5.5 X 8.5
224 pages
₹ 100 paperback
978-81-86470-38-7

भारतीय महात्मीयों की पथ प्रदर्शिका
अम्बो गेशे गुरु
गेशे गुरु का जन्म अम्बो के ग-सेर-म राज्य में सन 1934 में हुआ। इनका मां का नाम पद्मा तथा पिता हूट ढूंढ दोनों नामक छिंदा परम्परा के बहुत बड़े योगी थे।

बच्चेदेवी के साथ ही, गुरु का नाम बुद्ध बनने वाले गेशे गुरु के नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा दोनों के साथ ही नाम पद्मा तथा पिता हूट बनने वाले गुरु के नाम पद्मा

5.5 X 8.5
84 pages
₹ 80 paperback
978-93-80359-50-2
सार्वभौम दायित्व तथा शिक्षा पर वार्तालाप

“सार्वभौम दायित्व और शिक्षा पर वार्तालाप” परम पाथ चीहव्य दलाई लामा जी और वनावत भारतीय विद्वानों, धर्माचार्यों, धर्माचार्यों एवं समाज सूचीक्रों के मध्य जो दो कार्यालयों नई विद्वानों अभिकृत तथा ग्रीको, का परमाण है। सार्वभौम दायित्व के विचार, जिसके हमारे संसार में आवश्यकता पर परम पाथ दलाई लामा जी कई बार बोले रहे हैं, संभव पुरुष भारतीय दलित की उपज है। इस विचार का आधार बना कर प्रभाव कार्यकर्ता के प्रतिभागित ने, हम सब अपने समाज में मानवीय परिवर्तन कैसे ला सकते हैं, इसके तरीकों पर वार्तालाप किया है।

दूसरी कारणातित का केंद्र बना था- भारतीय परिवर्तन तात्त्व से सिद्धांत की भूमिका; समाज में वास्तव में शिक्षक की नींव से हैं, किस प्रकार की शिक्षा सबसे अधिक लाभदायी है, हम कैसे निर्मल कर सकते हैं कि चुना लोग अनुशासित, उदारता, संवृद्ध व्यक्तियों के रूप में विकसित हो, जिससे हम सब का आने वाला कल अच्छा हो।

साधारण तथा अभिलेख पुस्तकबाट द्वारा वांछित अत्यन्त तीर्थ की यह पत्ती पुर्तक, “सार्वभौम दायित्व और शिक्षा पर वार्तालाप” भारतीय दायित्व धर्माचार्य पुस्तक की आधुनिक विचार प्रणाली में प्रभावितकर्ता उन साधृ-साधृ, परम पाथ दलाई लामा जी के व्यवहारक्रम की अनुमय छुट्टी प्रस्तुत करती है।

साधृ मात्र

यह दलाई लामा के गीत / यह दलाई लामा

यह दलाई लामा स्वातंत्र्य विद्वेष तथा घसिल यह घसिल (१६८३-१७०६), जिनके नाम का अर्थ है “भैनु संग्राम का सम्म”, अनाशांत दलाई लामा थे।

उनका जन्म प्रसिद्ध विद्वान परिवार में हुआ, और बड़ी आयु में ही धार्मिक परिषद में हुआ। इस प्रकार छठ-यह यादों में दो परमाणों का असर विवेकवाद के हो। उनका उदास जीवन दुर्भाग्यपूर्ण राजनीति में आघात उठने वाली आघात व्यक्ति और शोषण की मुसाफिरों को इतिहास की कृति बिकृति और सुनिश्चित संगीतवादी कविता से आयोजित किया। यह ग्रोसोट जाति के लाभ घने के बायों में एक दृश्य मोटर मानने में एक दृश्य निकल गये। छठ-यह यादों में अपने अपने जीवनकाल में ही एक कामना की भाँति विद्वान पार्श्व। तिब्बती जनता अपने बड़े से साथ उनकी पुष्करी करती थी और उन पर सर्थि रखती थी। लिखित के दर से कोहों में प्रसिद्ध फार कर उनके गीतों में सहज लोक कविता में नये प्रणालों का संचार किया।

सान उदय

परम पाथ चीहव्य दलाई लामा

इतिहासी भारतीयों में प्रेम करते समय हमारे लिए धार्मिक परमाणों आज भी उत्तरी है सार्वभौम है जिन्हें कभी पहले थी। इस पर भी, अर्थात के तरह आज भी भिन्न-भिन्न धार्मिक परमाणों के बीच तकत्व एवं समयों पैदा होती रहती है। यह बहुत ही सूचनायुक्त है। इस रूप से काम करते हैं उन्हें हमें भारत प्राप्त करना चाहिए। भीम-भीम भीम में बीमा के बीच निकट समय: इस समय की स्वतन्त्र मात्र बिरूद्ध करने पर नहीं बिरूद्ध आयुक्त अपने के आधार पर भी महत्वपूर्ण है, आपसी सुध-सुध तथा समाचार का भाव पैदा करना है यह एक साधृ विचार है।

इस प्रकार के आदर-प्रदान द्वारा सम्मिलित समस्या की दुरुंस्ध्य स्थापित की जा सकती है। इस प्रकार प्रदान के आदर-प्रदान में समस्या तुरुम्बुल एवं परमाभावक है।

वे उदास है कि अग्नि-अग्नि धार्मिक पुस्तकों वाले बुद्ध व्यक्तियों के बीच समस्याओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ताकि वे अपनी-अपनी परमाणुओं की समस्याओं तथा समस्याओं को पहचान सकें। और भिन्न-भिन्न परमाणुओं के बीच जिन्हें कृतक प्राप्त आयुक्त प्राप्त हों हमें भी मिलें। यह जहरीले नहीं कि वे प्रकार के विद्वान हों, हो, ते विशेष व्याख्यान जो हो जो परमर एक साथ बैठे तथा धर्म तर्क जताय अपनी उल्लेखण को साझा करें। वे साधृ-साधृ के अनुभव के आधार सीधे तथा सामूहिक रूप में एक दूर रे के प्रभुदार्शन हेतु यह एक साधृ तथा प्रभावी तरीका है।
मेरा देश मेरे देशवासी

प्रथम प्रकाश चौहाड़ी दलाई लामा

एक वर्ष बाद, हिंदूस्तान में वापसी मोनस्म मुकाबले के समय, जब कि कई हजार बिहारी प्रतिवेदक वर्ष के राजस्व मात्र में होने वाले प्रादर्श के विशेष योजनाएँ भाग लेने के लिए शहर में आए थे, मैं अपनी अन्तिम परीक्षा के लिए उस्ताद हुए थे। यह परीक्षा तीन सप्ताह में हुई थी। सबसे पहले मैं धार्मिक समय के चारों में, एक-एक करके तीस विद्वानों ने प्रश्न का या तर्कालंकार में मेरी परीक्षा ली थी। दूसरे बाद पंढर विद्वानों ने माध्यमिकों और प्रारंभिक परीक्षा पर बहस में मेरे प्रतिद्वंद्वियों के रूप में भाग लिया था। शाम को "विवाद" अर्थात् शत सम्बन्ध अभीष्ट उपजाऊ के बयान और अधिकार व्याख्यात पत्रकार्य के अध्ययन, मेरे मेरी परीक्षा लेने के लिए, पैदल दिशा में और प्रायोजन में अपनी चम्कीदार हाल तथा पीली चौंकी धारण किये हुए सैकड़ों विद्वान दलाई लामा, जिनमें मेरे अपनी विश्वास भी थी और जान हारे हिंदू हमारे चारों और भूमि पर बैठे थे और उत्सुकता एवं विवेचनापूर्वक सन्दर्भ रहे थे। मैंसे मैं यहां स्वयं के अवसर धमचार कला मार्ग हुई थी, क्योंकि मैं अपने प्रतिद्वंद्वी प्रश्नों के द्वारा एकाधिकतात्मक होने पर था, और प्रश्नों का उत्तर तुरंत ही देना पड़ता था। इस प्रकार शास्त्रीय धर्म दलाई लामा के समस्त तत्त्वों होता था। निरंतर भवानी बुद्ध की महान धिनेहरू का इसे नवीन तक अध्ययन करने के बाद, तत्त्वमाशा के आचारी के दिशियां प्राप्त करने के लिए, अन्तिम परीक्षा देने का मुझे अस्वीकार था, और प्राप्त मैं। प्रत्येक मैं जानकर था कि आध्यात्मिक उपलब्धि हो उद्देश्य साधियां तत्त्वों के वाले पूर्व प्राप्त करने के लिए, वासियां में लगातार पढ़ने की आवश्यकता का बारी आने नहीं है।

बौद्ध धर्म का परिचय

प्रथम प्रकाश चौहाड़ी दलाई लामा

धर्म के अंतर्गत का एक कारण यह है कि वर्तमान जन्म की भौतिक प्रगति ही राष्ट्रीय सुख या सलामी नहीं है। वार्षिक में, हर एक लोग प्रायोजन होता है कि उन्होंने अधिक भौतिक तत्त्वों के अध्ययन करना हो, उन्होंने हर भौतिक रूप से पता लगाने के अध्ययन कर रहे हैं। इसके साथ-साथ धर्म के अध्ययन के लिए, हर मैं अपने प्रतिद्वंद्वियों के तत्त्वों के समस्त तत्त्वों होते हैं। बार-बार धर्म के अंतर्गत का मूर्त निरूपण यह है कि हम हर साधन के अध्ययन करने के लिए, हर भौतिक तत्त्वों के समस्त तत्त्वों होते हैं। बार-बार धर्म के अंतर्गत का मूर्त निरूपण यह है कि हम हर साधन के अध्ययन करने के लिए, हर भौतिक तत्त्वों के समस्त तत्त्वों होते हैं। बार-बार धर्म के अंतर्गत का मूर्त निरूपण यह है कि हम हर साधन के अध्ययन करने के लिए, हर भौतिक तत्त्वों के समस्त तत्त्वों होते हैं।
भोटवाणी (अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका)

(सिविलती से समर्पित अध्ययन हेतु प्रकाशन)

यह एक अर्ध वार्षिक भोटवाणी हिंदी पत्रिका है, जिसे सन् 2010 जुलाई, माह में परम पावन दलाई लामा जी के जन्म दिन के ध्वनि अवसर पर तिब्बती प्रविध व अभिलेख पुस्तकालय के तत्तवाधार में हिंदी में यह पहला अर्ध वार्षिक भोटवाणी पत्रिका का विसेचन हुआ। इस पत्रिका के माध्यम से तिब्बती बौद्ध धर्म, संस्कृति, परम्परा, इतिहास, लोक कथा और कविता आदि पर लेख प्रकाशित करता है। वैसे तो तिब्बत से समर्पित विषय में बहुत सारे पत्रिकायें उपलब्ध हैं परन्तु हिंदी भाषा में तिब्बत विषय पर हमें कम पत्रिका देखने की मिलती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस भोटवाणी पत्रिका से सभी हिंदी भाषी लाभार्थ होंगे।

भोटवाणी (अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>क्रमांक 1</th>
<th>पत्रिका का नाम</th>
<th>मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>2010</td>
<td>1 अंक 1</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2011</td>
<td>1 अंक 2</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2012</td>
<td>2 अंक 1</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2013</td>
<td>2 अंक 2</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2014</td>
<td>3 अंक 1</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2015</td>
<td>3 अंक 2</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2016</td>
<td>4 अंक 1</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2017</td>
<td>4 अंक 2</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>2018-2019</td>
<td>24-1-2-1 भोटवाणी</td>
<td>240</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2020-2021</td>
<td>6-1-8 अंक 2-1-2</td>
<td>भोटवाणी</td>
<td>---</td>
</tr>
</tbody>
</table>